इशरतजहॉ केश के बदलते रुप

समाजशास्त्र,राजनीतिशास्त्र तथा अर्थशास्त्र के संचालन के भिन्न–भिन्न स्वरुप होते है तथा संचालक के गुण भी अलग–अलग होते हैं।सामाजिक व्यक्ति के लिए लक्ष्य और साधन दोनों की पवित्रता होनी चाहिए जबकि राजनेता के लिए लक्ष्य पवित्र हो किन्तु विशेष परिस्थिति में साधन पवित्र नहीं भी हो सकता है। व्यवसायी के लिए भी लक्ष्य तो पवित्र होना चाहिए किन्तु साधन कुछ अपवित्र भी हो सकता है। समाजशास्त्र के संचालन में कूटनीति की आवश्यकता नहीं होती, किन्तु राजनीतिशास्त्र के संचालन में विशेष परिस्थिति में कूटनीति आवश्यक हो जाती है। अर्थशास्त्र में भी यदाकदा कूटनीति का प्रयोग होता है। इसका अर्थ है कि राजनीति से जुडे लोगों को कूटनीति का पूरा पूरा ज्ञान होना चाहिए।

यदि हम वर्तमान स्थिति की तुलना करें तो नरेन्द्र मोदी को भी एक सफल कूटनीतिज्ञ के रुप में माना जा सकता है,तथा पिछली सरकार के कार्यकाल में पी चिदम्बरम भी एक सफल कूटनीतिज्ञ माने गये। नरेन्द्र मोदी और पी चिदम्बरम में एक मामले में बिल्कुल भिन्नता दिखती है कि अब तक के कार्यकाल में मोदी की ईमानदारी पर कोई संदेह नहीं पैदा हुआ किन्तु पी चिदम्बरम की ईमानदारी असंदिग्ध नहीं कही जा सकती। विशेषकर वर्तमान में उनके पुत्र के विषय में घटनाएँ प्रकाश में आने के बाद तो यह संदेह और भी बढ़ जाता है। किन्तु इस एक कमी को छोड़कर पी चिदम्बरम में प्रधानमंत्री बनने के अन्य सभी गुण मौजुद थे। पी चिदम्बरम लक्ष्य की प्राप्ति के लिए मार्ग की पवित्रता से कभी बंधे नहीं रहे, और न ही किसी राजनेता को ऐसा बंधन स्वीकार करना चाहिए,क्योकि राजनीति का गुण होता है लक्ष्य के प्रति पवित्रता तथा मार्ग के प्रति परिस्थितिजन्य निर्णय। पिछले कार्यकाल में पी चिदम्बरम ने अग्निवेश जी को माध्यम बनाकर किसी बड़े नक्सलवादी को पकड़वा दिया था, या संभवतः मरवा दिया था। यह बात जगजाहिर है। मैं पूरी तरह आश्वस्त हूँ कि यदि दिग्विजय सिंह ने राहुल गॉधी के माध्यम से नक्सलवादियों को बचाने में ढाल का काम न किया होता तो जिस समय छ0ग0 में 76 सैनिक मारे गये थे उस समय पी चिदम्बरम जी ने नक्सलवाद का सम्पूर्ण सफाया करने का प्रण कर लिया था। और मैं आश्वस्त हूँ कि वे उस समय कुछ ही दिनों में नक्सलवाद को समाप्त करने में सफल हो जाते जिसकी शुरुवात छ0ग0 से होती। इसी तरह पी चिदम्बरम जी ने प्रणव मुखर्जी की गुप्त जासूसी कराने की भी तैयारी कर ली थी।

ऐसा लगता है कि पी चिदम्बरम को सोनिया गॉधी का वरदहस्त प्राप्त था । जब इशरतजहॉ का फर्जी एन्काउटर हुआ तो नरेन्द्र मोदी, अमित शाह की जोडी को फसाने के लिए पी चिदम्बरम सामने आये। मैं यह स्पष्ट कर दूँ कि इशरतजहॉ एक आतंकवादी थी जो गुजरात में आतंकवाद के सहारे वहॉ के प्रमुख नेताओं को मारना चाहती थी,तथा गुजरात पुलिस ने उसे ऐसी घटना के पहले ही फर्जी एन्काउंटर दिखाकर मार गिराया। इस घटना का कोई भाग भले ही असत्य हो, किन्तु मुझे पूर्व से ही ऐसा विश्वास रहा है। और अब तो यह विश्वास धीरे–धीरे प्रमाणित भी होने लगा है। इस घटना में नरेन्द्र मोदी अमित शाह को फसाने के लिए कांग्रेस सरकार की तरफ से भरसक प्रयास किये गये। किन्तु यह नहीं पता था कि ऐसे प्रयास में किसी तरह की जालसाजी भी की गई, जो अब सामने आ रही है। हो सकता है कि ऐसी जालसाजी करना पी चिदम्बरम का व्यक्तिगत लक्ष्य रहा हो। किन्तु ज्यादा सम्भावना इस बात की है कि ऐसा लक्ष्य पी चिदम्बरम जी को उपर से दिया गया। मैं समझता हूँ कि जो कुछ भी बातें सामने आ रही हैं वह कूटनीति की सीमाओं को भी पार कर रही हैं।क्योंकि कूटनीति का उपयोग शत्रु के विरुद्ध तो हो सकता है किन्तु प्रतिस्पर्धा के विरुद्ध यदि इतने नीचे स्तर की कूटनीति होती है तो वह पूरी तरह अनैतिक कार्य माना जाता है। यह कार्य यदि उपर के कहने पर किया गया तो पी चिदम्बरम इस अनैतिकता से बरी भी हो सकते हैं। किन्तु यदि उन्होने स्वयं स्वप्रेरणा से यह कार्य किया तो यह अत्यंत निन्दनीय है। कहीं भविष्य में ऐसा भी भेद न खुल जाये कि तीस्ता शीतलवाड़ को भी इन्ही लोगों ने मद्द करके आगे बढ़ाया हो।

न्यायालय में शपथ पत्र बदलने के जो उदाहरण सामने आ रहे है उनमें किसी तरह के संदेह की गुन्जाइश नहीं दिखती। दुख होता है यह जानकर कि मोदी अमित शाह को फसाने के लिए हमारी सरकार के गृहमंत्री ने आई बी और सीबीआई के बीच भी इतना बडा विवाद पैदा करने का जोखिम उठा लिया । इतना बड़ा जोखिम तो राष्ट्र की सुरक्षा के लिए भी घातक हो सकता है। थोड़े से राजनैतिक स्वार्थ के लिए देश की व्यवस्था के साथ इतना बडा धोखा अक्षम्य अपराध होना चाहिए। सत्य की परतें अभी और खुलेंगी किन्तु यह बात अवश्य विचारणीय है कि यदि पी चिदम्बरम जी ने इतना बडा खतरा उठाया तो उन्हें देशद्रोही मानना चाहिए। और यदि उन्होने किसी उपर के आदेश से ऐसा किया तो उपर वाले को देशद्रोही मानना चाहिए।और यदि सरकार बदलने के बाद नई सरकार ने ऐसा कोई जाल रचा तो उसे भी देशद्रोही सें कम नहीं कहॉ जा सकता। वैसे सच तो भविष्य में ही स्पष्ट हो पायेगा किन्तु मुझे अब तक की घटनाओं से यह स्पष्ट है कि नरेन्द्र मोदी, अमित शाह को फसाने के लिए इशरतजहॉ जैसी आतंकवादी को निर्दोष सिद्ध करने का प्रयास किया गया। मुझे तो इस घटना से एक यह झटका लगा कि नीतिश कुमार सरीखे व्यक्ति ने भी बिना जॉच पड़ताल किये इशरतजहॉ को बेगुनाह घोषित करने में जल्द बाजी करने की भूल की। नीतिश कुमार जी को भी इस मामले में अपनी भूल स्वीकार करनी चाहिए। आज कल राजनीति का स्तर बहुत तेजी से गिर रहा है। असंभव भी कभी कभी संभव बन जा रहा है। रमण सिंह और अजीत जोगी अंदर अंदर योजनाए बनाने लगे है। कहीं ऐसा ही असंभव भविष्य मे संभव हो जाये कि इशरत जहां स्वप्रेरित आतंकवादी न होकर बल्कि किसी समूह द्वारा नरेन्द्र मोदी की हत्या के लिये प्रेरित की गई थी तो एक नया असंभव संभव बन जायेगा। मेरी इच्छा है कि ऐसा न हो

1 जे एन यू प्रकरण और मैं

मैने जे एन यू प्रकरण के संबंध मे दो लेख लिखे। हमारे साथी नरेन्द्र सिंह जी ने पढकर मुझसे प्रश्न किया कि यह लेख आंशिक रूप से संघ परिवार के पक्ष मे अधिक झुका हुआ है जो हमारी अब तक की नीतियों मे कुछ बदलाव दिखता है। नरेन्द्र जी व्यवस्थापक के लिये सर्वोच्च नीति निर्धारक दस महत्वपूर्ण साथियो मे से एक हैं। इसलिये इस प्रश्न पर कुछ अधिक विस्तार से समीक्षा की आवश्यकता है।

नीति निर्धारण कई दृष्टिकोणों को एक साथ मिलाकर होता है। किसी व्यक्ति या संगठन के प्रति किये जाने वाले व्यवहार मे इन सबका समावेश होता है। 1 सिद्धान्त और नीति का अंतर । सिद्धान्त दीर्घ कालिक नीति होती हैं जबकि नीति सिर्फ अल्पकालिक ही होती है। 2 व्यवहार के आठ आधारो की कसौटी । क–सहभागिता ख– सहयोग ग– समर्थन ध– प्रशंसा च– समीक्षा छ– आलोचना ज–विरोध झ– शत्रुता। आठो के व्यवहार और नीति बिल्कुल भिन्न भिन्न होते हैं। 3 बेस्ट पौसिवुल अर्थात परिस्थिति जन्य सर्व श्रेष्ठ संभावना। 4 भावना प्रधान और बुद्धि प्रधान मे फर्क 5 संस्था और संगठन का फर्क । ये दोनो बिल्कुल भिन्न होते है। 6 कर्तब्य और दायित्व का फर्क समझना। ये भी भिन्न होते हैं 7 किया और प्रतिकिया मे फर्क 8 किसी संगठन मे सकिय और निष्किय सदस्य मे फर्क । इन आठ दृष्टिकोणो पर विस्तृत चर्चा करना संभव नही । निश्चित ही इन पर कई प्रश्न आयेगे तब विस्तार से चर्चा होगी किन्तु जे एन यू विवाद से जुडे पक्षो पर मेरा या हमारा दृष्टि कोण क्या है और क्या होना चाहिये इस पर विस्तृत चर्चा होगी।

1. (1) मै लोक स्वराज्य तथा अपराध नियंत्रण को सिद्धान्त मानता हूॅ और अहिंसा को नीति । स्पष्ट कर दूं कि मै बचपन से लेकर आज तक आर्य समाज से प्रभावित हूॅ। जहां अहिंसा को मार्ग माना गया है लक्ष्य नही। (2) मै कटटर हिन्दुत्व को श्रेष्ठतम विचार धारा मानता हूॅ तथा साम्यवाद को निकृष्टतम। मै व्यवस्थापक के साथ सहभागी , अन्ना हजारे सर्वोदय आर्य समाज का सहयोगी, नरेन्द्र मीदी नीतिश कुमार का समर्थक, मनमोहन सिंह अरविन्द केजरीवाल, प्रशान्त भूषण योगेन्द्र यादव का प्रशंसक, विशेष उल्लेख से भिन्न का समीक्षक , संघ परिवार तथा राजनीति मे बढते परिवारवाद का आलोचक, कटटरवादी इस्लाम का विरोधी तथा वामपंथ को शत्रु के रूप मे देखता हूॅ । मैने बीस वर्ष पूर्व अपनी हिन्दू मुस्लिम नीतियो की विवेचना करते हुए अपनी पुस्तक मे लिखा था कि धार्मिक आधार पर चार सम्प्रदाय होते हैं।

1 जो मान्यता में कट्टरवादी हैं तथा आचरण में भी कट्टरवादी हैं। (दूसरों के मूल अधिकारों का हनन करते हैं।)

2 जो मान्यता में शांतिप्रिय हैं और आचरण में कट्टरवादी।

3 जो मान्यता में कट्टरवादी हैं परन्तु आचरण में शांतिप्रिय।

4 जो मान्यता तथा आचरण दोनों में शान्तिप्रिय हैं। कट्टरवादी मुसलमान पहले श्रेणी में, कट्टरवादी हिन्दू दूसरी श्रेणी में, शांतिप्रिय मुसलमान तीसरी श्रेणी में और शांतिप्रिय हिन्दू चौथी श्रेणी में आते हैं। हमें पहली श्रेणी को तत्काल नष्ट कर देना चाहिये तथा दूसरी को भी नियंत्रित करने का प्रयास करना चाहिये तीसरी श्रेणी का हृदय परिवर्तन और चौथी श्रेणी का अनुकरण उपयुक्त मार्ग है।

इतना लिखना स्पष्ट करने के लिये पर्याप्त है। (3) परिस्थितियां निरंतर बदलते रहने से नीतियों मे भी तात्कालिक बदलाव संभव है। दो वर्ष पूर्व तक भाजपा का एक मार्ग था। अन्य राजनैजिक दल अल्पसंख्यक तुष्टीकरण तक सीमित थे किन्तु वामपंथ से उनका तालमेल नही था। अल्पसंख्यको का भी साम्यवाद से मोहभंग हो रहा था। नई परिस्थितियों मे सीधा ध्रुवीकरण दिखता है जिसमे कटटरपंथी मुसलमान और वामपंथी का एकीकरण हो गया है तथा पूरा विपक्ष ऐसे एकीकरण के पक्ष मे खडा हो गया हे। (4) भावना प्रधान और बुद्धि प्रधान मे फर्क होता है। हिन्दू आमतौर पर भावना प्रधान, मुसलमान भी अधिकांश भावना प्रधान तथा वामपंथी आमतौर पर बुद्धि प्रधान होता है। बुद्धि प्रधान मोटिवेटर तथा भावना प्रधान मोटिवेटेड होता है। भावना प्रधान पीछे पीछे चलता है और बुद्धि पधान चलाता है। संपूर्ण भारत मे सबसे ज्यादा भावना प्रधान संघ परिवार मे तथा सबसे अधिक बुद्धि प्रधान साम्यवाद मे पाये जाते है। (5) संस्था हमेशा समाज सहायक होती है तथा संगठन समस्या पैदा करने वाले। संस्था कर्तब्य प्रधान होती है तथा संगठन अधिकार प्रधान। अधिकांश बोहरा या सुफी मुसलमान, गायत्री परिवार, आर्य समाज, सर्वोदय आदि का व्यवहार संस्थागत होता है और संघ परिवार, अधिकांश मुसलमान, तथा साम्यवाद का संगठनात्मक। (6)कर्तब्य और दायित्व मे फर्क होता है। सभी व्यक्तियों के अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता सहित सभी मौलिक अधिकारो की सुरक्षा हम सबका दायित्व होता है। सामाजिक संवैधानिक अधिकारो की सुरक्षा हमारा दायित्व नही होता, सिर्फ कर्तब्य हो सकता है। (7) तीन संगठनो की कार्य प्रणाली एक समान होती है। क–संघ परिवार ख– मुस्लिम संगठन ग– वामपंथी। तीनो मे भी वामपंथी हमेशा ही किया करते है, मुस्लिम संगठन कभी किया तो कभी प्रतिकिया तथा संघ परिवार हमेशा प्रतिकिया करता है। जे एन यू मामले मे भी वामपंथ कटटरवादी मुस्लिम गठजोड ने किया की संघ परिवार ने प्रतिकिया की। गठजोड ने बडी चालाकी से किया करते हुए उसे नारे बाजी से कन्हैया कुमार की ओर मोड दिया। (8) वामपंथ से जुडा हर कार्यकर्ता निरंतर सकिय रहता है जबकि संघ परिवार या मुसलमानों मे

अधिकांश लोग संगठन के साथ जुडे हुए भी निष्क्रिय होते है। निष्क्रिय लोग किसी किया मे शामिल नही होते किन्तु प्रतिकिया मे शामिल हो जाते है।

हम सब साथी व्यवस्थापक के सहभागी है। हमारा लक्ष्य है लोक स्वराज्य । तीन संगठन लोक स्वराज्य मे बाधक है। 1 संघ परिवार, 2 इस्लाम 3 वामपंथ। इस्लाम और वामपंथ ने हाथ मिला लिया है। भाजपा को छोडकर अन्य सभी विपक्षी पार्टिया विभिन्न कारणो से इस गठजोड के पक्ष मे खडी हो गयी हैं। एक तो गठजोड के समक्ष संघ परिवार कमजोर दिखने लगा है। दूसरा यह कि गठजोड मे बुद्धिजीवी योजनाकारो की अधिकता है जबकि संघ परिवार कमजोर दिखने लगा है। दूसरा यह कि गठजोड मे बुद्धिजीवी योजनाकारो की अधिकता है जबकि संघ परिवार मे नासमझ भेडचाल चलने वालो की । तीसरी बात यह है कि नरेन्द्र मोदी संघ परिवार के साथ मिलकर सरकार चला रहे है न कि संध की सरकार है। ऐसी स्थिति मे गठजोड का निर्णायक रूप से मजबूत होना लोक स्वराज्य की संभावनाओ के लिये अधिक घातक है, और संघ परिवार का निर्णायक रूप से मजबूत होना कम घातक है। क्योकि मोदी और संघ एक हो जायेगे यह आवश्यक नही । दूसरी बात यह है कि संघ को विदेशी शक्ति नही मिलती। गठजोड को विदेशी शक्ति भी मिल सकती है।

फिर भी मैने अपनी नीति मे अब तक कोई बदलाव नही किया । वह अब भी पूर्वव्रत है किन्तु यदि जठजोड के समक्ष संघ परिवार के पराजित होने की संभावना दिखी तो हम आप सब बैठक नई नीति पर चर्चा करेंगे।

याद रखिये कि वर्तमान मे बुद्धिजीवी निर्माण के सिर्फ दो ही केन्द्र भारत मे है। 1 जे एन यू 2 ज्ञान यज्ञ परिवार । जे एन यू आतंकवादी उग्रवादी तानाशाह तैयार करता है तो ज्ञान यज्ञ परिवार आप जैसे लोक स्वराज्य समर्थक बुद्धिजीवी। जे एन यू एक तूफान के समान स्थापित है तो ज्ञान यज्ञ परिवार दीपक के समान टिमटिमाता हुआ । जे एन यू को विश्व व्यापी समर्थन है तो ज्ञान यज्ञ परिवार को मात्र एक ज्ञान तत्व पाक्षिक पत्रिका का । फिर भी इतना संतोष है कि विभिन्न कारणो से ज्ञान यज्ञ परिवार एक से दो तीन की दिशा मे बढ रहा है तो जे एन यू निन्यानवे से अठान्नवे सन्तान्न्वे की ओर ।

2 जे एन यू की घटना और भारत का इलेक्ट्रानिक मीडिया

मैंने प्रारंभ में ही स्पष्ट लिख दिया था कि जवाहरलाल नेहरू युनिवर्सिटी की घटना गॉधी हत्या के बाद होने वाली सर्वाधिक गंभीर और परिवर्तनकारी घटना है। गॉधी हत्या ने वामपंथ और कट्टरपंथी इस्लाम को एक ऐसा अवसर प्रदान किया था, जिसके बल पर इन दोंनो ने मिलकर भारत में शांतिप्रिय हिन्दुओं को दोयम दर्जे का नागरिक बनाकर रखा। अब समय बदला है और उस विचारधारा को दूसरी वैसी ही संघ परिवार समर्थक विचारधारा से तगडी चुनौती मिल रही है। संघ परिवार भरसक चाहता है कि बदले में उन लोगों को दोयम दर्जे का नागरिक बनाकर रखा जाये, जिन्होने 67 वर्षो तक गॉधी हत्या की घटना के नाम पर देश को ब्लैकमेल किया। जे एन यू की घटना ने वह अवसर दे दिया है, और दूसरा पक्ष उसी तरह कटघरे में खड़ा है जिस तरह उस समय से लेकर 67 वर्षो तक संघ खड़ा रहा। यह अंतर अवश्य है कि उस समय संघ ने दबकर, माफी मांगकर, गॉधी को अपने प्रातः स्मर्णीय, में शामिल करके, किसी तरह अपना काम निकाला था किन्तु अभी जे एन यू की घटना के बाद भी विपक्ष मुकाबला करने के मूड में है। क्या परिणाम होगा पता नहीं।

घटना ने देश के अधिकांश समूहों को दो गुटो में बांट दिया है। मीडिया भी उससे अछूता नहीं रहा। अब तक मीडिया एक संगठन था जो आपस में चाहे जितनी प्रतिस्पर्धा करें किन्तु मौका पडने पर सभी न्याय अन्याय को न देखते हुए एकजुट हो जाते थे। जे एन यू की घटना के बाद मैं विशेष रुप से दीपक चौरसिया का इंडिया टी बी, रोहित सरदाना की जी टी बी और रविश कुमार को एन डी टी बी में लगातार देखता रहा हूँ। यहॉ मैं आपको अपनी धारणा स्पष्ट कर दूँ कि मैं विचार को में एन के सिंह और अभय दुबे तथा ऐंकरों में रविश कुमार को अधिक सुनता रहा हूँ। जे एन यू की घटना के तत्काल बाद ही यह स्पष्ट दिखने लगा था कि जी टी बी और इंडिया टी बी आंख बंद करके भाजपा और संघ परिवार के पक्ष में जा रहे है इस सीमा तक भी कि पक्षपात बिल्कुल साफ दिख रहा था । दूसरी ओर मैंने यह भी देखा कि एन डी टी बी पूरी तरह आंख बंद करके जे एन यू मामले में भाजपा और संघ परिवार के खिलाफ खडा था । मैं जब भी देखता था तब मैं रविश कुमार को सुनता था तो ऐसा लगता था कि वे ठीक बोल रहे है और जब मैं दीपक चौरसिया ,रोहित सरदाना को सुनता था तो फिर मेरी धारणा बदल जाती थी और मैं इसी के बीच झूलता रहा। मैंने अभय दुबे और एन के सिंह जी को भी दो अलग अलग समूहों के पक्ष में खड़ा देखा। यद्यपि दोनो तर्को तक सीमित थे तथा अपनी निष्पक्षता पर खुलकर आंच नहीं आने दे रहे थे। लेकिन टी बी चैनल वाले तो ऐसा आचरण कर रहे थे जैसे कि वे अलग अलग पक्षकारों के वकील बन गये हों।

आज मैंने रविश कुमार का एक गंभीर आवाज वाला भावना प्रधान वक्तव्य सुना और मुझे लगा कि रविश कुमार बिल्कुल ठीक प्रश्न उठा रहे है कि कानून को अपना काम करना चाहिए न कि भीडतंत्र को जो कानून से भी उपर अपना निर्णय देने लगे। उसके तत्काल बाद मैंने इण्डिया टी बी पर एन के सिंह जी का जबाव सुना कि कानून को अपना काम करने देना चाहिए था और कन्हैया कुमार को बिना जांच पडताल के निर्दोष सिद्ध करने का दबाव बनाना गलत था। प्रश्न उठता है कि यह दबाव बनाने का कार्य कहां से शुरु हुआ? इस प्रश्न का उत्तर मैं देना नहीं चाहता क्योंकि मामला जे एन यू की घटना तक सीमित नहीं है। बल्कि दो संगठित समूहो के बीच इस बात की लडाई है कि भारत में कमजोर होते लोकतंत्र का दुरुपयोग करने में कौन आगे रहेगा। एक पक्ष 67 वर्षो तक दूसरे को दबाकर दुरुपयोग करता रहा तो दूसरा पक्ष भी अब वही करना चाहता है। मुझे रविश कुमार द्वारा प्रस्तुत भावनात्मक भाषण सुनने के बाद यह संदेह पैदा हुआ कि यह एन डी टी बी चैनल की नीतियों के आधार पर रविश कुमार को ऐसा करना पड़ा था या यह रविश कुमार की व्यक्तिगत पीडा थी। मैं दीपक चौरसिया और रोहित सरदाना से कभी प्रभावित नहीं रहा और इसलिए मुझे कोई झटका नहीं लगा।मैं सोचता हूँ कि यदि कोई गुण्डा मोहल्ले को परेशान करके उस पर अत्याचार कर रहा हो और कोई दूसरा गुण्डा जो उसके समकक्ष हो आकर उसके साथ भिड़ जाये तो मुझे किसी के साथ क्यों न्याय की बात करनी चाहिए? यह बात तब हो सकती है जब एक गुण्डा परास्त हो जाये और फिर भी दूसरा उस पर आक्रमण करता रहे । स्पष्ट है कि गॉधी हत्या के बाद संघ परास्त की मुद्रा में था और आज संघ विरोधी बराबरी का मुकाबला कर रहे है। ऐसी स्थिति में रविश कुमार को अपनी साख दांव पर नहीं लगानी चाहिए थी, जिस तरह एन के सिंह जी और अभय दुबे ने अपनी बात कहते हुए भी अपनी साख दांव पर नहीं लगाई। मैंने रविश कुमार के भावनात्मक वक्तव्य को तीन बार सुना और मैं इस नतीजे पर पहुँचा कि रविश कुमार अन्य टी बी ऐकरों की तरह कहीं व्यावसायिक प्रतिस्पर्धा में अपनी साख तो नहीं घटा रहे हैं।

मैंने जे एन यू प्रकरण पर पिछले दिनों में कई बार अपने विचार व्यक्त किये। मेरे कुछ साथियो को ऐसा लगा कि मेरे इस तरह के विचार से व्यवस्था परिवर्तन अभियान के संगठन को कुछ क्षति हो सकती है। क्योकि वे मुझे अपना संरक्षक मानते है।

इस प्रश्न पर भी मेंने विचार किया। पहली बात तो यह है कि मैं इस संगठन का संरक्षक नहीं। संरक्षक तो वात्सल्य जी, विजय कौशल जी तथा पौराणिक जी ही हैं। यदि आप लोग मुझे संरक्षक मानते है तो यह आपके द्वारा प्रदर्शित सम्मान तक सीमित है, उसके आगे नहीं, क्योंकि मैं किसी रुप में अपने को संगठन का संरक्षक नहीं मानता। यहॉ तक कि मैं सलाह या सहायता भी कभी कभी विशेष आमंत्रित के रुप में ही देता हूँ, न कि आपकी किसी बैठक में अधिकृत रुप से आकर।

दूसरी बात यह भी है कि मैं एक विचारक हूँ और अब विचार से आगे बढ़कर मैंने वानप्रस्थ स्वीकार कर लिया है, तथा मैं धीरे धीरे सन्यास की दिशा में बढ़ रहा हूँ। इसका अर्थ है कि मुझे किसी भी परिस्थिति में किसी भी संगठन के प्रति प्रतिबद्ध नहीं होना चाहिए। संगठन का एक अनुशासन होता है और मैं स्वअनुशासन के अतिरिक्त किसी अन्य का अनुशासन स्वीकार नहीं कर सकता। यहॉ तक कि मैं राष्ट्र या देश हित के मामले में भी किसी अनुशासन से बंधा नहीं हूँ।

मेरे स्वतंत्र लेखन से आपके संगठन को कोई क्षति न हो इसका मैं स्वयं ख्याल रखता हूँ। किन्तु मैं आपके संगठन के लिए अपनी निष्पक्षता को नहीं छोड़ सकता। मैंने कुछ वर्ष पूर्व मनमोहन सिंह को देश का स्वतंत्रता के बाद का सबसे अच्छा प्रधानमंत्री लिखा था और मैं आज भी इस बात से सहमत हूँ, यहॉ तक कि नरेन्द्र मोदी की तुलना में भी। हमारे अनेक साथियों ने लगातार मेरे इस विचार का विरोध किया था। मैं वर्तमान परिस्थितियों में नरेन्द्र मोदी को अन्य सभी उम्मीदवारों की तुलना में अच्छा प्रधानमंत्री मान रहा हूँ। यह मेरा व्यक्तिगत विचार है। हमारे साथियों का विचार भिन्न भी हो सकता है। मेरे जो विचार हैं वे संगठन के लिए विचार मंथन तक सीमित है, उसके आगे नहीं। मैं समझता हूँ कि जे एन यू प्रकरण में मेरे लिखने से संगठन के साथ जुडे वामपंथी, कांग्रेसी, आप पार्टी समर्थकों को कुछ कष्ट हो सकता है, और वे मुझे संघ की ओर झुका हुआ कह सकते हैं। किन्तु आप सब जानते है कि आपका संगठन सिर्फ चार मुद्दों तक सीमित है, और चार मुद्दों को छोड़कर किसी भी विषय का संगठन से कोई संबंध नहीं है। इन चार मुद्दों पर मैंने कोई ऐसी बात नहीं कही है, जो संगठन के विपरीत जाती हो। यद्यपि यदि कभी ऐसी गम्भीर आवश्यकता पड़ी तो मैं संगठन के विरुद्ध भी कुछ लिखने की , बोलने की

अपनी स्वतंत्रता कायम रखता हूँ। आशा है कि आप मेरी स्वतंत्रता को समझेंगे। 13 जून 14 से 22 जून तक के 10 दिवसीय आयोजन में जब संगठन की नीव रखी गई थी उस समय मैं भी कार्यक्रम में शामिल था। वहॉ भी यही तय हुआ था कि संगठन चार मुद्दों पर अपना संगठन विस्तार करेगा, तथा मैं ज्ञानयज्ञ परिवार तथा ज्ञानतत्व पाक्षिक की सहायता से दुनिया में फैले सत्य के समान स्थापित असत्य को वैचारिक आधार पर चुनौती दूँगा। मैं देख रहा हूँ कि आप ठीक दिशा में लगातार आगे बढ़ रहे है, और मैं भी ठीक दिशा में लगातार आगे बढ़ रहा हूँ। मैं समझता हूँ कि आप मेरी स्थिति को समझेंगे।

3 श्री संजय तिवारी ने जे एन यू विवाद पर मेरे विचारो को पढने के बाद एक प्रश्न किया है कि आप कभी पूरी तरह संघ परिवार के पक्ष मे खडे दिखते है, तो कभी पूरी तरह उसके विरूद्ध। समझ मे नही आता कि आप अंतिम रूप से क्या कहना चाहते है और किसके पक्ष मे खडे हैं।

मैने इस प्रश्न पर भी बहुत विचार किया । स्पष्ट है कि मै विचार मंथन पर जोर देता हूँ, विचार प्रचार पर नहीं। मंथन का अर्थ होता है गुण दोष के आधार पर विषय की समीक्षा। मेरा स्वभाव है कि यदि संघ परिवार से जुडा हुआ कोई व्यक्ति किसी अन्य विरोधी पर तर्कहीन आक्रमण करता है या संघ परिवार के विचार प्रचार मे लगा हुआ होता है तो मै पूरी तरह ऐसे तर्कहीन विचार प्रचार का खंडन करता हूँ । किन्तु यदि मै देखता हूँ कि कोई संघ विरोधी तर्कहीन आधार पर संघ पर आक्रमण करता है तो मै उस आक्रमण का भी उतनी ही ताकत से विरोध करता हूँ। मै न कभी किसी के पक्ष मे हूँ न ही किसी के विरोध मे। मेरे विचार मे अधिकांश मामलो मे अंतिम सत्य कोई नही है और इसलिये मै विचार मंथन को विस्तार देने के लिये और संगठनो के प्रति प्रतिबद्धता पर चोट करने के लिये इस प्रकार अलग अलग तरह के विचार रखता हूँ। मेरा उददेश्य कोई संगठन बनाना नही है कि कोई मेरे उत्तरो से नाराज हो जायेगा। मुझे खुशी होती है कि यदि किसी की भावना को चोट लगती हैं। मै इसका अर्थ यह समझता हूँ कि वह थोडा सा विचार मंथन की दिशा मे आगे बढेगा। दुसरी बात यह है कि किसी को अच्छा या बुरा बताने के पहले यह देखना आवश्यक है कि उसकी तुलना किससे हो रही है। न कोई अंतिम रूप से अच्छा है न कोई बुरा। यदि लोकतंत्र की तानाशाही से तुलना होगी तो लोकतंत्र अच्छा कहा जायेगा। और लोकतंत्र की तुलना लोक स्वराज्य से होगी तो लोकतंत्र बुरा कहा जायेगा। अरविन्द केजरीवाल की चर्चा करते समय उनकी तुलना नीतिश कुमार से होगी तो अरविन्द केजरीवाल को बुरा माना जायेगा और उन्ही की तुलना लालू प्रसाद यादव से होगी तो उन्हे अच्छा माना जायेगा। इसका अर्थ हआ कि संघ परिवार की तुलना जब अतिवादी इस्लाम और साम्यवाद से होती है तब संघ परिवार को अच्छा कहा जाता है, और जब संघ परिवार की तुलना गांधीवादियों या हिन्दुत्व से होती है तो संघ परिवार को बुरा कहा जाता है। मेरे विचार मे तुलना करते समय संदर्भ को ध्यान मे रखना आवश्यक होता है। मै पुनः स्पष्ट कर दूं कि मै किसी विचार प्रचार का प्रतिनिधित्व नही कर रहा। मै तो सिर्फ विचार मंथन का प्रतिनिधित्व कर रहा हूँ। इसका अर्थ यह है कि मै नही चाहता कि आप मेरे निकाले गये निष्कर्षो को स्वीकार कर ले बल्कि मै तो यह चाहता हूँ कि आप भी स्वयं निष्कर्ष निकालने की अपनी क्षमता का विकास करें । मुझे खुशी होगी, जब सब प्रकार के संगठनो के प्रति प्रतिबद्धता कमजोर होगी और कुछ लोग तटस्थ भाव से विचार मंथन मे आगे आयेंगे।

प्रश्नोत्तर

क्या हम सब राष्ट्र विरोधी नहीं हैं?

चेतन भगत, अंग्रेजी के युवा उपन्यासकार

यह हो क्या रहा है? पहले सारा मामला भाजपा बनाम शेष था, बाद में यह सहिष्णु बनाम असहिष्णु का मामला हो गया। अब यह राष्ट्रवादी और राष्ट्र–विरोधी का मामला बन गया है। कुछ बच्चों ने दिल्ली के जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय में प्रदर्शन किया। कोई बड़ी बात नहीं, क्योकि जेएन यू में क्लासरुम में होने वाले व्याख्यानों की बजाय सर्वाधिक विरोध प्रदर्शन होते हैं। हालांकि इस लेख में जेएनयू पर कोई फैसला नहीं दिया जा रहा है। यह उस वक्त के बारे में है जब यूनिवर्सिटी ने ऐसा व्यवहार शुरु किया। इस लेख का उद्देश्य इसकी व्याख्या करना है, क्योकि राष्ट्र–विरोधी, भारत–विरोधी लैबल लगाने का काम जारी है? अवॉर्ड वापसी से लेकर जेएनयू विरोध तक किसी न किसी को हमेशा पाकिस्तान जाने को कहा जाता है। क्यों? कृपया गौर करें कि इस लेख में किसी का पक्ष नहीं लिया जा रहा है। जब दोनो पक्ष के लोग मूर्खतापूर्ण ढंग से व्यवहार कर रहे हों, तो बेहतर यही होगा कि सारा कुछ चुपचाप देखते रहें।

तो हो क्या रहा है? अनिवार्य रुप से भारतीय राजनीति इस एक समीकरण से संचालित है डी+एम>एच किताबी ढंग से कहने के लिए माफी चाहता हूँ लेकिन मुझे जरा समझाने दीजिए। 'डी' का मतलब है दलित बल्कि आरक्षित जाति के सभी वोटर(एससी/एसटी/पिछडे/ओबीसी) आप इन्हें दलित वोट भी कह सकते हैं। 'एम' का मतलब है मुस्लिम वोट। आप मुझे अल्पसंख्यक यानी माइनॉरिटी वोट कह सकते हैं। 'एच' का मतलब है हिन्दू वोट। 'ग्रेटर देन' के चिन्ह का अर्थ है कि दलित व अल्पसंख्यकों के वोट मिलकर हमेशा ही सवर्ण हिन्दुओं से ज्यादा होते हैं। मात्रा निश्चित करना तो मुश्किल है, लेकिन मोटेतौर पर 'डी' 40 फीसदी, 'एम' 20 और 'एच' 40 फीसदी है। बेशक, समीकरण जरुरत से ज्यादा सरल बनाया गया है। किन्तु इससे देश में आज के पॉलिटिकल डायनामिक का अंदाज होता है। उक्त समीकरण का अर्थ है कि सामान्य परिस्थितियों में भाजपा लगभग कभी भी सत्ता में नहीं आ पाएगी। आश्चर्य नहीं कि स्वतंत्रता के बाद के 69 वर्षो में भाजपा 7 वर्षो से भी कम समय तक सत्ता में रहे हैं। भाजपा के सत्ता में आने का एक ही रास्ता है कि निम्न में से कुछ हो जाए।

एक डी+एम वोट इसलिए बंट जाए, क्योकि इस वोट के लिए कई दल होड़ करने लगे। दो डी और एम किसी खास चुनाव में किसी न किसी वजह से अलग हो जाए। तीन भाजपा ऐसा करिश्माई प्रत्याशी खडा करती है, जो कुछ डी और यहॉ तक कि एम वोट को भी एच की ओर खींच लाता है। 2014 के लोकसभा चुनाव में यह सब हुआ और मोदी को जीत मिली। बिहार चुनाव में भाजपा विरोधी दलों ने सुनिश्चित किया कि डी+एम न बंटे और उन्हें जीत मिली। 2015 के दिल्ली चुनाव में आम आदमी पार्टी ने न सिर्फ डी+एम के वोट लिए, इसने एच का अच्छा खासा हिस्सा भी अपने साथ मिलाने में कामयाबी हासिल की। ऐसा क्यों है कि डी+एम वोट लगातार एच के खिलाफ है? ऐसा इसलिए है क्योंकि डी और एम दोनों उंची जातियों के हिन्दुओं द्वारा प्रताड़ित महसूस करते हैं। उन्हें लगता है कि उंची जाति के हिन्दुओं ने उन्हें अवसरों से वंचित रखा। डी+एम वोटों का इतना बड़ा हिस्सा है कि कई राजनीतिक दल उन्हें लुभाने में लग जाते हैं। डी और एम को उपर उठाने का अंतिम समाधान तो इन समुदायों मे ही है कि वे शिक्षा और आधुनिकीकरण पर ध्यान केन्द्रित करें। चूंकि यह ज्यादा कठिन है,उनका प्रतिनिधित्व करने वाले राजनीतिक दल ऐसे एजेंडे से चिपके रहते हैं,जिसमें एच और एच के अकांक्षाओं पर हमले किये जाते हैं। जिसमें एच और एम वोट का लाभ उठाया है। सपा, बसपा, तृणमूल, राजद, और जद–यू ऐसे अन्य दलों के उदाहरण हैं,जिनकी इस वोट पर नजर रही है। यहॉ तक कि आप को भी इस वोट की कीमत का अहसास है। इसी वजह से वह लगातार मोदी पर हमले करती है। (डी एम वोट किसे चाहिए यह जानना हो तो इसका टेस्ट यह देखना है कि दलित या मुस्लिम संबंधी दुर्भाग्यपूर्ण घटनाओं के मौके पर कौन सा राजनेता वहॉ पहुंचता है।)

इस बीच एच वोट चीजों को अलग ढंग से देखता है। उसे नहीं लगता कि वह किसी का शिकार हुआ है, इसलिए उसमें बदला लेने की कोई अंतनिहीत भावना नहीं है। वास्तविकता तो यह है कि एच बेहतर भारत का सपना भी देख सकता है। वह ऐसे राष्ट्र की हसरत रखता है जो संपन्न हो, स्वतंत्र हो और दुनिया में जिसका सम्मान हो। चूंकि डीएम एच को रुष्ट करना चाहता है, इसलिए जब भी एच की आकांक्षाए भंग होती है तो प्रायः यह इसका लुत्फ उठाता है। यहीं पर राष्ट्र विरोधी होने का मामला जन्म लेता है। वह सोचता है कि आरक्षण तुष्टीकरण करने वाली नीतियों के बाद भी डीएम आगे बढ़कर हमारी अपेक्षाओं में सहभागी क्यों नहीं बनते? डी एम सोचते हैं कि जब हम पीड़ित है तो एच बडा सपना देखने की हिम्मत कैसे कर सकता है? भारत का पहला दायित्व हमारे प्रति है। एच अपनी हसरतें हम पर थोपने की हिम्मत कैसे करता है?

यही मूलभूत संघर्ष हमारी रोजमर्रा की राजनीति, खबरों और बहस को जन्म देता है। दुख की बात तो यह है कि इससे असली राष्ट्र विरोधियों को हमारे बीच घुस आने और हमें विभाजित करने का मौका मिल जाता है। हालांकि डी एम वोट चाहने वाली पार्टिया इसकी पर्याप्त निंदा नहीं करती कि कहीं एम वोट खिसक न जाए। इसी तरह कोई हाशिये पर पडा हिंदू गुट चौंका देने वाला हिन्दुत्ववादी बयान दे देता है। भाजपा भी इसकी पर्याप्त आलोचना नहीं करती कि कहीं एच वोट नाराज न हो जाए। डी एम और एच के सतत संघर्ष में शिकार एक ही होता है भारत। समीकरण इस प्रकार होना ही नहीं चाहिए। डी एम एच बेहतर कॉम्बिनेशन है और ये बदला लेने की बजाय असली मुद्दो के आधार पर फैसला ले सकते है कि किसे वोट देना चाहिए। राजनेताओं को इनमें विभाजन पसंद है। इससे उन्हें असली काम पर ध्यान केन्द्रित करने की बजाय सिर्फ संघर्ष को बढावा देकर प्रासंगिक बने रहने में मदद मिलती है। और ऐसा लगता है कि हम नागरिक भी इससे उबर नहीं पाते। किन्तु यदि हम सब एक साथ नहीं आते तो क्या हम सब राष्ट्र विरोधी नहीं हैं?

डी को एच के साथ एकजुट होना चाहिए और विभाजन बढ़ाने वाले शाश्वत आरक्षण के बजाय कोई बेहतर योजना लानी चाहिए। एम को यह समझना चाहिए कि भारत पहले और धर्म बाद में है। एच को चाहिए कि वह अपनी संस्कृति या दृष्टिकोण दूसरों पर न थोपे, क्योंकि हर कोई इनकी तरह नहीं सोचता। सबको एकसाथ आना होगा। सारे पक्षों को सुनना होगा और मतभेद दूर करने होंगे। कोई डी एम या एच नहीं है। हम सबको केवल आई की जरुरत है, जो इंडिया यानी भारत का प्रतिनिधित्व करता है। और जब हम सच्चे राष्ट्रवादी होते हैं तो यही होता है।

उत्तरः— आपने जो विचार व्यक्त किया है वह बहुत ही सुलझा हुआ है। दो बाते विचारणीय हैं—1. राष्ट्रवाद और हिन्दुत्व के बीच कैसा तालमेल होना चाहिए। 2. भारतीय राजनीति की वर्तमान स्थिति में संघ परिवार को क्या करना चाहिए। हिन्दुत्व का अर्थ कभी राष्ट्रवाद नहीं रहा है बल्कि वसुधैव कुटुम्बकम आदर्श रहा है। वसुधैव कुटुम्बकम का अर्थ परिवार, गॉव,समाज,जिला, प्रदेश और राष्ट्र का सम्पूर्ण समर्पण नहीं होता। वसुधैव कुटुम्बकम का अर्थ होता है अपने अस्तित्व को बचाते हुए उपर वाली इकाई के साथ तालमेल बैठाना। इसका अर्थ हुआ कि उपर वाली इकाई की गुलामी नहीं और उपर वाली इकाई से सम्पूर्ण स्वतंत्रता भी नहीं। दोनो अपनी स्वतंत्रता को बचाते हुए एक दूसरे के पूरक होते है। साम्यवाद तथा इस्लाम का अर्थ होता है विश्व व्यवस्था की गुलामी और संघ परिवार का अर्थ होता है विश्व व्यवस्था से सम्पूर्ण स्वतंत्रता। मेरे विचार से दोनों ही गलत हैं और यदि दोनों में से किसी एक को अधिक गलत मानना हो तो संघ परिवार की अपेक्षा साम्यवादी इस्लामिक गठजोड़ अधिक गलत होगा।

भारतीय राजनीति का आपने जो विश्लेषण किया यह विश्लेषण संघ परिवार को समझाने की जरुरत है। मैं स्पष्ट कर दूॅ कि मेरे व्यक्तिगत विचार में संघ परिवार एक नासमझों की टोली है जो कोई भी अच्छी बात कभी समझ ही नही सकते क्योंकि समझने के लिए कुछ दिमाग की जरुरत पड़ती है जो इनके पास नहीं होता। दूसरी ओर वामपंथ केवल बुद्धिजीवियों का ही एक समूह है जिन्हें अपनी राजनैतिक तिकड़म के अलावा किसी की कोई बात न सुननी है न समझनी है। वामपंथी लोग इतने अधिक चालाक होते हैं कि वे संघ परिवार को भी अपने अनुसार नचाते रहते हैं, और संघ परिवार उसी अनुसार नाचता है। आपने जो समीकरण दिया है उस समीकरण में डी और एम का बहुमत बनाने की सारी योजना वामपंथियों की है। वामपंथी चाहते हैं कि संघ परिवार एम से इतना दूर रहे, इतना अधिक टकराव में रहे कि एम मजबूर होकर सी के साथ जुड जाये। हुआ भी यही कि एम इसके साथ जुड़ गया। अब वामपंथी लगातार डी पर ध्यान दे रहे है, और मैं देख रह हूॅ कि धीरे धीरे डी भी उसी गुट में चला जायेगा और उन सबका एक ही कारण होगा कि एच न संघ के साथ जुड़ पा रहा है और न ही उससे अलग हो पा रहा हैं। महिषासुर चर्चा ने आंशिक रूप से डी को एच से दूर ही किया है, नजदीक नहीं। भागवत जी की आरक्षण चर्चा भी डी को एच से दूर ही कर रही है। जबकि इन सब चर्चाओ से एच मजबूत नहीं हो रहा है। यदि संघ परिवार के लोगों में थोडी भी समझदारी होती तो ये एम और डी की चर्चा छोड़कर सिर्फ डी के विरुद्ध ध्रुवीकरण करते । सी का अर्थ कम्यूनिस्ट या वामपंथी होना चाहिए। इन्हें हिन्दू राष्ट्र का नारा दफन कर देना चाहिए। इन्हें राष्ट्र भक्ति और राष्ट्रवाद की चर्चा ही नहीं करनी चाहिए। इन्हें तो केवल वर्ग संघर्ष के विरुद्ध वर्ग समन्वय की चर्चा करनी चाहिए। जिसका अर्थ होगा सी से निपटना । व्यक्तिगत चर्चाओं में संघ परिवार के लोग अच्छी तरह मानते है कि सी सबसे बड़ा खतरा है किन्तु सौ वर्ष पूर्व हेडगेवार जी ने उस समय की परिस्थितियों में एम को खतरा बताया था इसलिए ये चाहे परिस्थितियॉ जितनी भी बदल जायें किन्तु अपने संस्कारों में संशोधन नहीं कर सकते। आवश्यकता इस बात की है कि ना समझों के नेतृत्व से पिंड छुडाकर तथा उन्हें नाराज न होने देकर सी के विरुद्ध भारतीय राजनीति का वातावरण बने। यदि संघ परिवार को सी अपने अनुसार चला सकता है तो कोई कारण नही कि एच उसे अपने साथ आसानी से न चला सके ।

2 मीलिंद गुप्ता—फेस बुक से

प्रश्न—इस पर किन्चित प्रकाश डालिये कि किस प्रकार परिवार व्यवस्था को तोड़ कर नेताओं को फायदा हो रहा है? यह सही है कि भारत में नियम कानून, विधि—विधान महिला के पक्ष में हैं जिसका दुरुपयोग अधिक हो रहा है। परिवारों के टूटने में विधायिका को अपरोक्ष रुप से मैं उत्तरदायी मानता हूॅ, परन्तु इससे नेताओं को क्या लाभ पहुॅच रहा हैं, यह समझ पाने में मैं असमर्थ हूॅ। धर्म अथवा जाति के नाम पर तोड़ने से ध्रुवीकरण होता है जिसका

चुनाव में लाभ होता है किन्तु परिवार के टूटने से कोई ध्रुवीकरण नहीं होता,तो फिर इससे नेताओं को क्या लाभ पहुँच रहां है? कृपया विस्तारपूर्वक विवेचना करें।

उत्तरः—आपका प्रश्न पहले ही मिल गया था किन्तु विषय गंभीर है,इसलिए उत्तर देने में देर हुई। मैंने जो नारा लिखा था वह इस प्रकार था—हिन्दू मुस्लिम,जात—पात पर तोड़ दिया संसार को,देश के नेता कुछ तो छोड़ो, मत तोडो परिवार को। मैंने इस नारे में यह लिखा है कि दुनिया की राजनीति ने धर्म—जाति, गरीब—अमीर, महिला—पुरुष के नाम पर सम्पूर्ण समाज को अनेक वर्गों में विभाजित कर दिया। भारत में भी इन सब विभाजनकारी आधारों पर समाज को तोड़ने की प्रक्रिया लगातार जारी है। किन्तु पूरी दुनिया में परिवार व्यवस्था को वैसी मान्यता प्राप्त नहीं है जैसी भारत में है। इसलिए वहॉ परिवार व्यवस्था का अभाव होने से उन्हें तोड़ने की जरुरत नहीं पड़ी। भारत में परिवार व्यवस्था मजबूती से चल रही है। अब इस परिवार व्यवस्था को भी महिला और पुरुष के बीच ध्रुवीकरण करके तोड़ने की कोशिश हो रही है। यह कोशिश पश्चिम मॉडल के लोकतंत्र तथा साम्यवादी मॉडल के समाजवाद की नकल करने का परिणाम है अथवा कोई सोची समझी साजिश, यह तो मैं नहीं कह सकता,किन्तु यह भारत में लगातार हो रहा है,और इसके गंभीर दुष्परिणाम होंगे। इसलिए ही मैंने निवेदन किया कि नेता लोग कम से कम परिवारों को तोड़ने की प्रवृत्ति से अलग रहें।

एक बात और है कि ध्रुवीकरण की शुरुवात में ही ध्रुवीकरण कराने वालो को लाभ नहीं होता, बल्कि ध्रुवीकरण हो जाने के बाद होता है। महिला और पुरुष के बीच ध्रुवीकरण अभी प्रारंभिक चरण में है। किन्तु यह ध्रुवीकरण यदि बढ़ता रहा और परिवार टूटते रहे तो ऐसा ध्रुवीकरण राजनैतिक नेताओं के लिए लाभदायक होना संभव है। राजनैतिक बिरादरी दूरगामी योजना बनाकर चल रही दिखती है।

3 श्री संजय तिवारी, दिल्ली

प्रश्नः—आज 29 फरवरी का दिन पाकिस्तान के लिए ऐतिहासिक हो गया है। ऐतिहासिक इस लिहाज से कि मजहवी मानसिकता पर इंसानी कानून की जीत हुई है और इस्लामिक कानून के पैरोकार पर कटे पक्षी की तरह फडफडा रहे है।

अव्वल तो पाकिस्तान मे मुमताजकादरी को फांसी दे दी गयी। यह मुमताज कादरी वही शख्स है जिसने पाकिस्तानी पंजाब के होम मिनिस्टर सलमान तासीर के सीने में अपनी एके 47 से सताइस गोलिया उतार दी थी। वैसे तो वह उनका सरकारी बॉडीगार्ड था लेकिन उसने पाया कि होम मिनिस्टर साहब इश निंदा कानून को गलत बता रहे हैं। बस फिर क्या था। एक मुस्लिम होने के नाते उसका फर्ज बनता था कि वह अल्लाह निंदक को मौत की सजा दे दे, सो उसने दे दिया।

हांलाकि 2011 में हुए हत्याकांड के बाद पाकिस्तान में नागरिक समाज और कट्टरपंथी जमातें आमने सामने खडी हो गयी थीं। पाकिस्तान की कट्टरपंथी और मजहबी जमातों ने जमकर उसका साथ दिया लेकिन नागरिक कानून के आगे उनकी एक न चली। जावेद अहमद घामडी जैसे मॉडरेट मॉलवियों और धर्म प्रचारकों ने भी मुमताज कादरी की फांसी का समर्थन किया और हाईकोर्ट प्रेसिडेंट कहीं से भी उसे कोई राहत नहीं मिली और वहीं भेज दिया गया जहॉ उसने सलमान तासीर को भेजा था।

दूसरा आज पाकिस्तान के पंजाब में ही महिला सुरक्षा कानून को मंजूरी मिल गयी है। कानून लगभग वैसा ही है जैसा दो साल पहले भारत में बना था। फर्क सिर्फ इतना है कि कानून का दुरुपयोग करने वाली महिला को भी सख्त सजा का प्रावधान किया गया है। औरत के साथ छेडछाड शारीरिक मानसिक और आर्थिक शोषण पीछा करना यौन आक्रमण आदि को कानूनन अपराध का दर्जा दे दिया गया है। मौलवियों को ऐसे कानून का विरोध करना ही था और वे कर भी रहे हैं। जमात ए उलमा ए इस्लाम के मौलाना फललुर्रहमान ने कहा है कि यह कानून शरीया लों के खिलाफ है। पंजाब के चीफ मिनिस्टर शाहबाज शरीफ अब तक पंजाब के सेवक थे अब अपने ही घर के नौकर बन गया है।

आज के दिन पाकिस्तान में घटित दो बडी घटनाएँ अच्छा संकेत है, जो बताती है कि मजहब के नाम पर बना पाकिस्तान मजहबी मानसिकता से बाहर निकलकर इंसानी कानूनों के जरिए अपना भविष्य बनाने की कोशिश कर रहा है जो मजहबी मानसिकता पर इंसानी कोशिशों की जीत है।

उत्तरः— यह सही है कि पाकिस्तान ने एक हत्यारे मुसलमान को मृत्यु दण्ड देकर एक ऐतिहासिक काम किया है। मुझे तो जरा भी विश्वास नहीं था कि पाकिस्तान सरीखा मुस्लिम बहुमत वाला देश ईश निंदा के मामले में इतना अलग हटकर कैसे कार्यवाही कर सकता है। लेकिन वह कार्य उसने कर दिखाया। इसके विरोध में जैसी संभावना थी उतना बड़ा आन्दोलन भी अब तक नहीं खडा हुआ। इसका हमें यह अर्थ समझना चाहिए कि विश्वव्यापी आलोचना का प्रभाव मुसलमानों पर भी पड़ना शुरु हुआ है। यदि कट्टरवादी हिन्दू अर्थात् संघ परिवार इस इशारे

को समझदारी से समझना शुरु करे तो भारत की अनेक समस्याओं का समाधान हो सकता है। पाकिस्तान में जब से नवाज शरीफ जी की सरकार बनी है तब से लगातार दिशा ठीक चल रही है। हमारे भारत के मीडिया को भी संतुलित विचार व्यक्त करना चाहिए। पाकिस्तान हमारा पडोसी है और वहॉ के शासक नवाज शरीफ ठीक दिशा में बढ़ रहे है तो हमें अंधदेश भक्ति दिखाकर अपनी ना समझी का परिचय देने से बचना चाहिए।

4 एम एल चौहान बालाघाट म0 प्र0 ज्ञानतत्व कमांक–657054

प्रश्नः–आपके ज्ञानतत्व पाक्षिक 16 जनवरी से 31 जनवरी को पड़कर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हुई, जिसमें परम्परागत परिवार एवं आधुनिक परिवार के विषयान्तर्गत लेख एवं उनके भेद में बहुत ही सारगर्भित तथ्य हैं। इससे मैं सहमत हूॅ । दोनों में वास्तविक अंतर भी है । आपने पश्चिमी देश की संस्कृति, साम्यवादी संस्कृति, इस्लामिक संस्कृति एवं भारतीय संस्कृति ये चार विचारधाराएॅ बताई है। ये चारों एक ही भारतीय संस्कृति मे समाहित हो जाते तो सम्पूर्ण देश के हित में होगा। इसके लिए प्रशासन एवं समाज को मिलकर एक कानून बनाना चाहिए। यद्यपि इस्लामिक संस्कृति का इसमें अधिक मत नहीं मिल सकता तथापि उससे शांति स्थापित करने हेतु वर्तमान सरकार पहल कर रही है। इस्लामिक संस्कृति के बेमेल से पारम्पारिक परिवार व्यवस्था कमजोर तो होती जा रही है जिसमें आज के राजनेताओं का भी सहयोग प्रदान किया जा रहा है। दो प्रतिशत महिलाओं के सहयोगी बनकर 98प्रतिशत महिलाओं की भावनाओं पर कुठाराघात साबित हो रहा है। इससे एक सम्पूर्ण राज्य की अनोखी तानाशाही चल रही है। इस तथ्य को नकारा नहीं जा सकता। ऐसी गंदी राजनीति जोर पकड़कर भारत की एकाग्रता को तहस नहस करने में लगी है। स्वतंत्रता के बाद आपने लिखा है कि भारतीय संवैधानिक एवं कानूनी व्यवस्था में पंडित नेहरु तथा भीमराव अम्बेडकर का वर्चस्व रहा था। इन दोनों ने मिलकर परिवार व्यवस्था के विरुद्ध षड़यंत्र रचा। इसको समझने मे मैं असमर्थ हूॅ। मेरे विचार से भारत का संविधान जो विश्व में सबसे वृद्ध एवं प्रथम भगवान रुपी माना जाता है, जो विश्व को प्यारा है फिर परिवार व्यवस्था के विरुद्ध षडयंत्र रचने का प्रश्न ही नहीं उठना चाहिए? उसमें परिस्थिति के अनुसार जनहितों का ध्यान रखते हुए जो उचित हों उस दिशा में संविधान संशोधन करने की स्वतंत्रता दी गई है। पंडित नेहरू को परिवार व्यवस्था के विरुद्ध में कहा जाना न्याय संगत हो अथवा न हो इसमें मेरा कुछ लेना देना नहीं है, किन्तु वे अपने कपडों की धुलाई पेरिश से करवाया करते थे। इतना मै अवश्य जानता हूॅ ।

उत्तरः–आपने पाश्चात्य संस्कृति, साम्यवादी संस्कृति तथा इस्लामिक संस्कृति के भारतीय संस्कृति में विलय की इच्छा व्यक्त की है और उस इच्छा की पूर्ति के लिए कोई कानून बनाने की बात की है। मैं आपकी दोनो बातों से असहमत हूॅ। संस्कृतियों को अपनी अपनी योग्यता और क्षमता के अनुसार आपस में सामंजस्य और प्रतिस्पर्धा करने दीजिये । यदि भारतीय संस्कृति में योग्यता होगी तो आप जो सोच रहे है वैसा अपने आप हो जायेगा और कुछ करने की आवश्यकता नहीं पडेगी। सिर्फ एक काम करना होगा कि हम भारतीय संस्कृति को अन्य संस्कृति के साथ प्रतिस्पर्धा की नीयत से स्वयं को नीचे न गिराते जाये। मैं महसूस करता हूॅ कि संघ परिवार ऐसी गलती कर रहा है।

आपने भारत के वर्तमान संविधान की बहुत प्रशंसा की है तो आप इस बात पर विचार करिये कि कोई संविधान या संविधान के अर्न्तगत बनी शासकीय व्यवस्था की सफलता असफलता का मापदण्ड क्या होगा। मेरे विचार से इसका मापदण्ड यह है कि संविधान सामाजिक व्यवस्था का पालन करने वाले व्यक्तियों के आंतरिक मामलों में कोई हस्तक्षेप न करे तथा समाज विरोधी लोगों को अपनी आदत छोडने के लिए बाध्य कर दे। इसका अर्थ हुआ कि सामाजिक लोग पूरी तरह भयमुक्त हों तथा समाज विरोधी तत्व पूरी तरह भयग्रस्त हों। इस अर्थ मे यह भी भाव छिपा हुआ है कि सामाजिक लोग कानून के भय से भी मुक्त हो तथा अपराधियों के भय से भी। यदि संविधान इस कार्य में सफल नहीं होता तो वह संविधान असफल माना जाता है और यदि किसी संविधान के रहते हुए परिस्थितियॉ इसके विपरीत हो जाये तो ऐसा संविधान दोषी माना जाता है। आप आकलन करके बताइये कि भारत का संविधान सफल है या असफल है अथवा दोषी। मेरे आकलन के अनुसार भारतीय संविधान सफल तो है ही नही बल्कि उसे असफल भी नही कह सकते। क्योकि सरसठ वर्षो मे समाज भयभीत है और समाज विरोधी तत्व भय रहित। इस तरह भारतीय संविधान दोषी है अर्थात अपराधी है।

आपने संविधान संशोधन की स्वतंत्रता की बात की तो भारतीय संविधान इतना गडबड संविधान है कि उसने संविधान का पालन करने वालो को ही उसमें संशोधन की भी स्वतंत्रता दे दी। यदि भारतीय संसद मनमाने संविधान संशोधन कर ले तो आपके पास उस संशोधन को अमान्य करने का क्या तरीका है। यदि संसद बिना समाज से पूछे समाज के अधिकार अपने पास समेटती जाये जैसा उसने 70 वर्षो में किया है तो हम ऐसी परिस्थिति में अपने अधिकारों को संवैधानिक तरीके से कैसे बचा सकते है? क्या लोकतंत्र का अर्थ संसद की गुलामी के अतिरिक्त और भी कुछ बचा है? मतदान का अर्थ इस बात पर मोहर लगाना मात्र है कि आपकी नजर में पूरे भारत में ऐसा कौन समूह है जिसकी गुलामी स्वीकार करने के लिए आप सहमत है तथा इस समूह मे आप अपनी ओर से किसे भेजना चाहते हैं । आप भले ही प्रति पांच वर्ष में अपनी गुलामी पर मोहर लगाने को स्वतंत्रता मानते हो किन्तु मैं इसे स्वतंत्रता नहीं समझता।

5 आकाश पांडेय, फेस बुक से

जे एन यू ने देश को क्या दिया? हारवर्ड और एम आई टी बोस्टन विश्व विद्यालयों ने अमेरिका को अमेरिका बनाया । आक्सफोर्ड और केम्ब्रिज ने ब्रिटेन को नयी बुलंदिया दीं। ए एम यू बी एच यू, मद्रास बाम्बे और इलाहाबाद यूनिवर्सिटी पर भी हमें कभी नाज था। लेकिन हिन्दुस्तान के नम्बर एक जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय ने हिन्दुस्तान को क्या दिया? देश की सबसे बडी सबसे ज्यादा बजट वाली सबसे बडे कैपस वाली जे एन यू ने हमे क्या दिया? कुछ चुने हुए बडे सेकुलर पत्रकार? बुछ बडे एन जी ओ के भ्रष्ट मठाधीश? कुछ जनांदोलन के फ्लाप नेता? या माओवादी और नक्सल सोच के स्वयम्भू ? हिन्दुस्तानियों के पसीने की कमाई और उस पर दिये गये टैक्स के पैसो से यह यूनिवर्सिटी चल रही है और पिछले 42 सालो मे कई हजार करोड रूपये यहां खर्च हो चुके है। लेकिन इस जे एन यू ने हमे क्या दिया? वामपंथी विचारधारा के तेजस्वी नेताओ और पत्रकारों के अलावा क्या दिया? क्या आप जानते है कि जे एन यू का एक लिखित संविधान है और इसे बडी मेहनत से प्रकाश करात ने संवारा था। प्रकाश करात सीताराम येचुरी की तरह ही जे एन यू से निकले तेजस्वी नेता हैं। क्या आपको मालूम है कि नेपाल के माओवादी नेता बाबुराम भटटाराई भी जे एन यू की ही देन हैं। जे एन यू से शिक्षा लेने के बाद बाबुराम ने 1990 के दशक मे पीपुल वार आंदोलन शुरू किया। बाबुराम ने नेपाल की हजारो साल पुरानी संस्कृति को भ्रष्ट करके माओवाद की काठमांडू मे नीव रखी और हिमालय के इस पवित्र राष्ट्र को तबाह कर दिया? चौकिये मत भारत के नक्सल इलाको मे सकिय कई भूमिगत नेता भी जे एन यू के तेजस्वी छात्र हैं। मित्रो जे एन यू पर बहुत कुछ लिखना है पर सबसे सवाल यही है कि हमारे आपके टैक्स से चलने वाले इस विश्वविद्यालय ने देश को क्या दिया? संस्कृति और शिक्षा के इस सबसे बडे मंदिर से कौन सी गंगोत्री बहाई जा रही है? सिर्फ 350 रिसर्च प्रोजेक्ट चल रहे है जबकि ये संख्या हजारो मे होनी चाहिये। स्वच्छंद विचारों के नाम पर यहां का कैंपस अय्यासी ओर ड्रग्स का चारागाह बन गया है। यहां सेकुलरिज्म के नाम पर कामरेड तैयार कराये जाते है। आखिर हारवर्ड येल आक्सफोर्ड या केम्ब्रिज की तरह इस विश्वविधालय ने भारत को क्या दिया? क्या यह सच नहीं है कि ये विश्वविद्यालय देश मे सिमटती वामपंथी राजनीति का अखाडा बन गया जहां से एक ऐसी सोच निकल रही है जे मुटठी भर लोगो के राजनीतिक स्वार्थ को पूरी करती है, समूचे देश की सेवा नही?

उत्तर– पंडित नेहरू कभी साम्यवादी नही रहे किन्तु उनका पूरा पूरा झुकाव वामपंथ की दिशा मे था। स्वतंत्रता के तत्काल बाद आम तौर पर बुद्धिजीवियों सत्तालोलुपो तथा तानाशाही प्रवृत्ति वालों का स्वाभाविक झुकाव वामपंथ की दिशा मे होता था। वामपंथ अकेला ऐसा मार्ग है जहां आर्थिक उच्श्रृखलता को छोडकर अन्य किसी भी प्रकार की उच्श्रृखलता की पूरी छूट है। पंडित नेहरू के लिये भी यही मार्ग अच्छा दिखा।

जिस उददेश्य से जे एन यू की स्थापना हुई थी उस दिशा मे ही वह सफलता पूर्वक बढता रहा। आज भी भारत के प्रशासनिक उच्चपदों पर जे एन यू के निकले हुए लोग ही बहुमत में हैं । उनमे प्रशासनिक पद की योग्यता तो थी ही साथ ही उन्हे वामपंथी सोच भी वहा बैठने मे मदद करती थी। यह तो एकाएक ही हुआ कि वामपंथी विचारधारा संकट मे आ गई और जे एन यू पर प्रश्न उठने लगे।

जे एन यू मे चल रही गतिविधियों का घोर विरोधी होते हुए भी मै यह ठीक नही समझता कि उसकी स्वायत्तता को सीमित किया जाय। जे एन यू मे अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर जो हुआ उसकी रोक थाम एक अलग विषय है। अतिवादी वामपंथी मुस्लिम गठजोड से पिंड छूटना चाहिये। किन्तु कुआ से निकलकर खाई मे गिरने के प्रति भी हमे सतर्क रहना चाहिये। संघ परिवार के अतिवादियों को भी हावी होने से रोकने की तैयारी रखनी आवश्यक है आशा है कि इस संबंध मे भी आप गंभीरता पूर्वक सोच रहे होंगे।

6 असहनशीलता से देशद्रोह तक, अमर सिंह आर्य जयपुर राजस्थान, ज्ञानतत्व कमांक 754004

जे एन यू मे कैपिटल पनिश्मेन्ट पर संगोष्ठि से विवाद अफजल गुरू की फोटो लगाने से उठा । यह किसकी शरारत थी यह अब तक रहस्य है। शंका उमर खालिद पर है। परन्तु सोचने की बात यह है कि आयोजको को

क्यों पता नहीं कि हम क्या करने जा रहे हैं और हो क्या रहा है। आयोजक छात्रों की कुछ जिम्मेदारी है अथवा नहीं। दंतेवाडा मे यू पी ए काल मे नक्सलियो द्वारा 76 पुलिस कर्मियो को घेर कर हत्या कर दी गई थी। अफजल गुरू को भारत की न्यायिक प्रकिया से फांसी दी गई थी। इस पर विवाद उठाना इसे शहादत का नाम देना हमारी न्याय प्रणाली को चुनौती नहीं है क्या? क्या किसी की अभिव्यक्ति देश समाज से उपर है? ऐसी अभिव्यक्ति जो आम लोगो के अहित मे जाती हो उसकी अनुमति कैसे दी जा सकती हैं। गिलानी संसद हमले मे सबूत के अभाव मे छूट गया। इस समय जब देश का वातावरण दूषित है गिलानी द्वारा दिल्ली प्रेस कलब मे देश विरोधी नारे व अन्य गतिविधियों के कारण देशद्रोह के आरोप मे गिरफ्तारी सिद्ध करती है कि उसमें कोई सुधार नही आया। विनायक सेन की सजा पर सुप्रीम कोर्ट मे जमानत पर बहस के समय अन्तर्राष्टीय चर्च के प्रतिनिधियों का वहा उपस्थिति रहना न्याय प्रकिया पर दबाव बनाने के प्रयास जैसा था। इस पर भी उस समय प्रश्न उठा था जो सब आपको ज्ञात है।

2 महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि कौन अपराधी कौन नही। ये पुलिस जांच से न्यायालय द्वारा तय हो या मीडिया ट्रायल से या वकीलों पार्टी कार्यकर्ताओ नेताओं के प्रदर्शन से । आज जैसे माहौल मे क्या पुलिस न्यायालय निष्पक्ष निर्भीक होकर काम कर सकते है? दिशाहीन शिक्षा दिशाहीन मीडिया अराजक होती राजनीति पर क्या कहेंगे । इसमे सुधार के उपाय होने चाहिये या यू ही चलने दिया जाये।

3 आज यह सोचने की जरूरत हे कि यह देश कुछ लाख सिरफिरे लोगो के हिसाब से चलने दिया जाये अथवा सवा सौ करोड की आवश्यकतानुसार कानून सम्मत तरीके से चलाया जाये? लगता है कि सारी प्रशासनिक व न्याय प्रणाली ध्वस्त जैसी होने के कगार पर खडी हैं। हालात गंभीर है। जिम्मेदार नागरिक के नाते सोचना चाहिये, और सुझाव आये उन पर विचार हो। 4 वर्तमान हालात के लिये विगत की सरकारो के कार्य परिणामो के साथ साथ सरकार व विपक्ष का बिना सोचे समझे किसी भी मामले मे कूदना कतई उचित नहीं । किसकी सरकार रहे किसकी नही इससे उन कार्यकर्ताओ को तो फर्क पडता है, जिन्होने राजनीति को व्यवसाय बना लिया है परन्तु आम भारतीय को इससे कोई फर्क नही पडता। यह देश बडे बडे झंझट झेल चुका है । इन्तहा जुल्म सह चुका है। हजारो साल गुलाम रह चुका है परन्तु आज भी स्वार्थ त्यागने को तेयार नहीं । फूट हमारे अंदर गहरे तक घर कर गई है। बाहर वालो को सहने अपनो को दुत्कारने की आदत आज भी गई नही है। इसके हालात देखकर लगता है हम अपने को मिटाने मे ही लगे है।

5 आज लग ये रहा है कि कोई एक दल या कोई एक नेता नही बल्कि पूरी राजनीतिक बिरादरी के अधिकतर लोग माहौल बिगाडने मे लगे हैं। उन्हे न शर्म आती है न अफसोस होता है। और भी अधिक दुख होता है जब ऐसे लोगो के खिलाफ कार्यवाही नही होती। प्रधानमंत्री मुख्यमंत्रियाों को समझना चाहिये । वे पार्टी के नहीं देश के हैं। वें अराजक तत्वो के खिलाफ सख्ती से कार्यवाही करे इससे पहले कि अराजकता इस देश को लील जाये।

उत्तरार्ध

ग्राम सभा की विवेचना

दिनांक 8 फरवरी से 14 फरवरी तक लोक सभा टीवी चैनल की एक टीम ने रामचंद्रपुर ब्लाक के चार गांव तथा एक शहर रामानुजगंज मे ग्राम सभा की प्रणाली की रेकार्डिग की। उस रेकार्डिग मे होने वाले प्रश्न और उनके संक्षिप्त उत्तर इस प्रकार रहे ।

ग्राम सभा प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1– (क) ग्राम सभा और ग्राम पंचायत का फर्क

उत्तरः– ग्राम सभा मालिक,ग्राम पंचायत मैनेजर

(ख)ग्राम सभा की अवधि

उत्तरः–शाश्वत। न कभी प्रारंभ न कभी अन्त। निरंतर

(ग)आरक्षण

उत्तरः– ग्राम सभा अकेली इकाई जिसमें सबके समान अधिकार।न कोई आदिवासीहरिजन,सवर्ण,न महिला,पुरुष,न गरीब अमीर, न नेता, न युवा वृद्ध।

(घ)ग्राम सभा में सरपंच की भूमिका

उत्तरः– किसी को विशेष अधिकार नहीं। सरपंच भी समान रुप से बैठता है।

प्रश्न–2– (क) क्या आपकी ग्राम सभा में भी ऐसा ही होता है?

उत्तरः–पहले तो ऐसा नहीं था किन्तु अब धीरे धीरे समानता बढ़ रही हैं।

(ख)कई जगह ग्राम सभा में लोग नहीं आते और घर से ही हस्ताक्षर हो जाते हैं।

उत्तरः—यह आमतौर पर होता है। किन्तु हमारे ब्लाक में घूम कर यह सिखाया गया कि बैठक के बाद हस्ताक्षर करते समय एक आदमी लिखे कि कितने आदमी आये । उसके बाद ऐसा बंद।

(ग)कई जगह मीटिंग के बाद भी नये प्रस्ताव जुड़ जाते हैं।

उत्तरः— हमें यह सिखाया गया कि बैठक के बाद प्रस्ताव लिखा जाय और उसके नीचे एक दो लोग हस्ताक्षर कर दें। साथ ही दूसरी बैठक के समय पिछली बैठक का विवरण पढ़ना आवश्यक है तथा ध्यान से सुने।

(घ)प्रस्ताव कौन पढ़कर सुनाता है।

उत्तरः—कभी कभी गॉव का ही कोई आदमी पढ़ देता है तो कभी कर्मचारी पढ़ता है।

प्रश्न 3— आपके गॉव में भ्रष्टाचार

उत्तरः— भ्रष्टाचार तो सभी जगह है तो यहॉ भी कुछ न कुछ होगा ही। किन्तु अब धीरे धीरे घट रहा है। ग्राम सभा में तो हो ही नहीं सकता किन्तु ग्राम पंचायत में हो सकता हैं। जब से ग्राम सभा ,ग्राम पंचायत के हर काम का आडिट करने लगी है तब से वहॉ भी भय हो गया है।

प्रश्न 4— ग्राम सभा मजबूत होने से आपको लाभ

उत्तरः— आपसी टकराव आपस में निपट जाते हैं। धार्मिक कटुता, जातीय कटुता नहीं है। कुछ समाज सुधार की भी चर्चाए भी होती है। जैसे शराब पर रोक, शिक्षा विस्तार, वृक्षारोपण आदि।

प्रश्न 5—आप बैठकर सर्वसम्मति से पंच सरपंच क्यों नहीं चुनते

उत्तरः— पहले तो कभी कभी होता था पर अब पार्टी वाले नेता लोग नहीं होने देते।

प्रश्न 6— वर्तमान सरकार आने के बाद आप लोगों के लिये सबसे अच्छा काम क्या हुआ।

उत्तरः—नक्सलवादियों से मुक्ति मिली।

प्रश्न 7—क— आप लोगों को सरकार से क्या परेशानी है।

उत्तरः— हम लोग अपना सामान शहर में बेचने जाते हैं तो व्यापारी कम पैसा देते हैं और पूछने पर कहते हैं कि सरकारी टैक्स कटता है। अनाज, तिलहन, दलहन, वन उपज कोई भी चीज। यहॉ तक कि अपनी जमीन की वनोपज या पेड काटकर बेचने पर टैक्स कटता है।

हम जब बाजार में कोई चीज खरीदते हैं तब व्यापारी महंगे में देकर कहता है कि सरकारी टैक्स लगता है। बेचने पर भी टैक्स और खरीदने पर भी टैक्स।

ख—सरकार टैक्स न ले तो खर्च कैसे चलेगा?

उत्तरः—पहली बात तो हमारा यह क्षेत्र सबसे गरीब पिछड़ा हैं आदिवासी वहुल है। सरकार को टैक्स माफ करना चाहिए। न करे तो कम से कम यह तो बताये कि हमारे ब्लाक से कितना वसूला और कितना खर्च किया? हमें लगता है कि हमसे वसूल कर हमें तो थोंडा सा देकर ठग देते हैं और शहरों पर खर्च करते हैं।

ग— आप क्या चाहते हैं

उत्तरः— सरकार न टैक्स ले न दे। ग्राम सभा को अधिकार दे कि वह अपनी व्यवस्था खुद करे। सरकार बाहर से लेकर जो देना चाहे वह ग्राम सभा को इक्ट्ठा दे दे।

प्रश्न 8—क— सामने कुर्सी पर एक आदमी टोपी लगा कर बैठा है वह कौन है

उत्तरः— वह ग्राम देवता है।

ख— ग्राम देवता क्या होता है

उत्तरः— हमारे ब्लाक के हर गॉव में एक सबसे शरीफ, सीधे साधे आदमी को ग्राम देवता चुना जाता है।

ग— काम क्या है

उत्तरः— कुछ नहीं। एक तरह से वह गॉव का राष्ट्रपति की तरह होता है।

घ—फिर ग्राम देवता क्यों?

उत्तरः— समाज में अच्छे लोगों को न पावर मिल पाता है न धन। उसे कम से कम इज्जत तो मिले तभी तो कोई आदमी शराफत की तरफ बढ़ेगा।

प्रश्न 9— आप सरकारी कानून में क्या बदलाव चाहते हैं?

उत्तरः— हम लोग नब्बे प्रतिशत आदिवासी हैं। हमारे पडोसी गैर आदिवासी की जमीन एक करोड़ में बिकती है तो हमारी एक लाख में। हममें से कोई आदिवासी कुछ तरक्की कर लिया,नेता या कर्मचारी बन गया तो वह सस्ते में खरीद लेगा। सरकार बदलाव करे कि कोई आदिवासी यदि जमीन बेचेगा तो बाजार दर पर बिकेगी अन्यथा वह जमीन भूमि बैंक खरीदेगा कोई अन्य आदिवासी नहीं। अन्य आदिवासी बैंक से ही खरीद सकता है।